Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP-PSC

राज्य सिविल सेवा

मेन्स

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

पेपर – 1 (A), पेपर – 2 (A), पेपर – 3 (A), पेपर – 3 (B)

मध्यप्रदेश का इतिहास, राजव्यवस्था, अर्थव्यवस्था एवं विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	गर्दभिल्ल वंश	1
2	तोमर वंश	3
3	बुंदेलखंड रियासत	5
4	मध्यप्रदेश का गठन और निर्माण	10
5	मध्यप्रदेश के जनजातीय नायकों का संघर्ष एवं इतिहास में योगदान	12
6	जनजातीय अर्थव्यवस्था	14
7	प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के लिए नीतियाँ	16
8	राज्य का राजस्व, व्यय, ऋण एवं राजकोषीय अनुशासन	20
9	मध्यप्रदेश की आर्थिक समीक्षा 2023	26
10	जवाबदेही और अधिकार	55
11	मध्यप्रदेश का प्रशासन	70
12	स्थानीय स्वशासन में वित्त नौकरशाही एवं स्वायत्तता का महत्व	74
13	मध्यप्रदेश की राजनीति में महिलाओं का योगदान	79
14	नक्सलवाद	85
15	मध्यप्रदेश का राजनीतिक परिदृश्य	91
16	जैविक खेती	104
17	जैव प्रौद्योगिकी एवं उसके अनुप्रयोग	109
18	ईथनोबायोलॉजी के अनुप्रयोग	119
19	प्राचीन एवं आधुनिक भारतीय वेधशालाओं से संबंधित प्रारंभिक जानकारी	120
20	आयुर्वेद	122
21	योग	129
22	प्राकृतिक चिकित्सा	144
23	षोडश संस्कार	148

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	बायोमार्कर	157
25	भारतीय परंपरा और संस्कृति में पर्यावरण की अवधारणा	159
26	जनपदोध्वंस	162

1 Chapter गर्दभिल्ल वंश

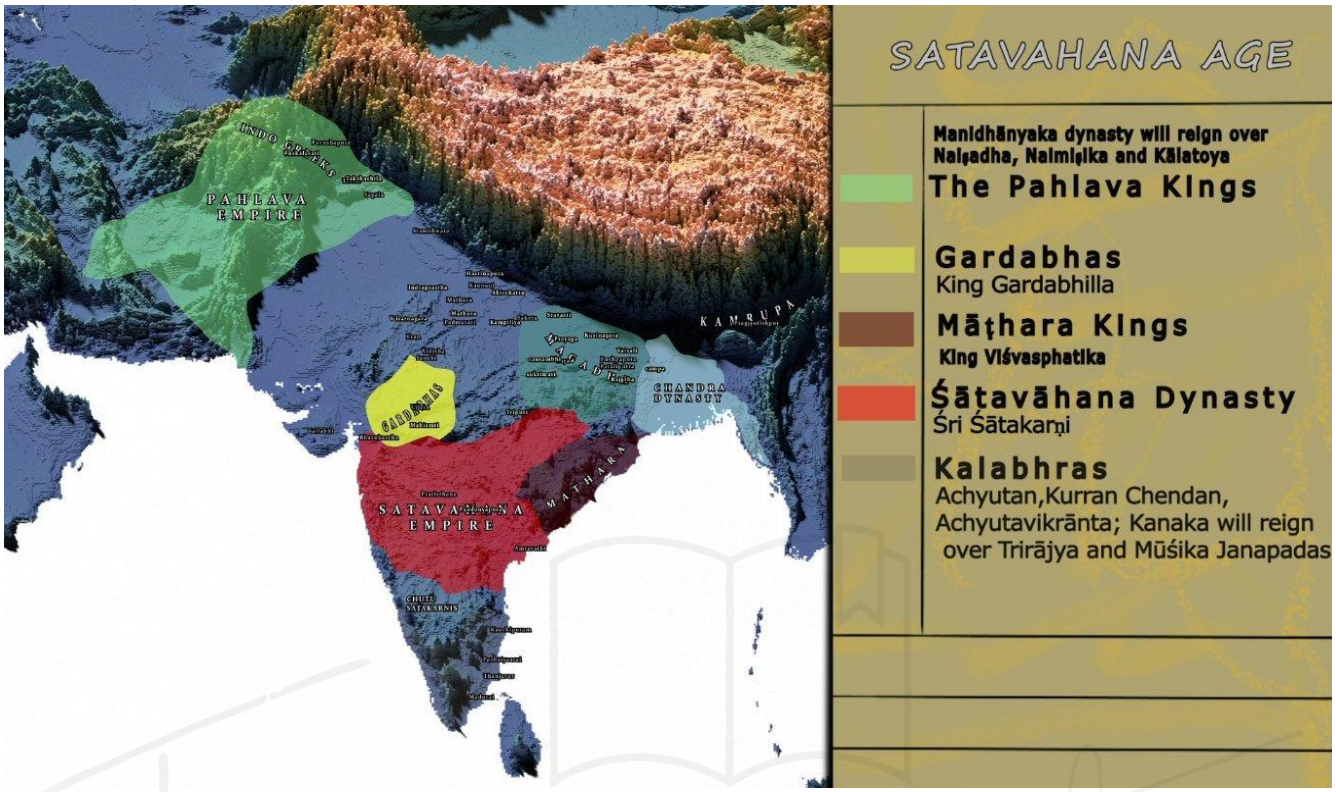

- उज्जयिनी के राजा गर्दभिल्ल ने पहली शताब्दी ई.पू. शासन किया और इन्होने ही गर्दभिल्ल वंश की स्थापना की
- गर्दभिल्ल आंध्र सातवाहनों के सामंत के रूप में उज्जैन में शासन करते थे।
- गर्दभिल्ल को उज्जैन के महान शासक **विक्रमादित्य का पिता** माना जाता है
- विष्णु पुराण और वायु पुराण में उल्लिखित है कि सात गर्दभिल्ल शासकों का एक परिवार समकालीन शासक राजवंशों में से एक था।
- हिन्दू धर्म के भविष्य पुराण के अनुसार राजा विक्रमादित्य के पिता का नाम गन्धर्वसेन था
- भविष्य पुराण के अनुसार गर्दभिल्ल के पिता देवराज इंद्र थे। दूसरी शताब्दी ई.पू. मे मालवा पर राजा गंधर्वसेन का शासन था| उस वक्त मालवा एक स्वतंत्र राज्य था।
- गर्दभिल्ल के सेनापति का नाम वीरभद्र और मंत्री का नाम विष्णुदत्त था।
- गर्दभिल्ल की पत्नी का नाम वीरमती था। उनके दो पुत्र हुए भर्तृहरि और विक्रमसेन(विक्रमादित्य)।
- भर्तृहरि गर्दभिल्ल के बड़े पुत्र थे जिन्होंने संन्यास धारण कर लिया था
- उज्जैन में भर्तृहरि गुफा स्थित है जो हिन्दू धर्म की आस्था का केंद्र है
- श्वेताम्बर मान्यता के अनुसार मालवा में गन्धर्व के स्थान पर गर्दभिल्ल का नाम आता है अथवा गर्दभी विद्या जानने के कारण यह राजा गर्दभिल्ल के नाम से प्रसिद्ध हो गया था।
- एक जैन जनश्रुति के अनुसार भारत में शकों को आमंत्रित करने का श्रेय आचार्य कालक द्वितीय (जैन भिक्षु) को है। ये जैन आचार्य उज्जैन के निवासी थे और वहां के राजा गर्दभिल्ल के अत्याचारों से तंग आकर सुदूर पश्चिम के पार्थियन राज्य में चले गए थे।
- इसी सन्दर्भ में यह भी मान्यता है कि गर्दभिल्ल कालकाचार्य द्वितीय की बहन का अपहरण कर लिया था।
- **मेरुतुंगा के विकारसरेनी के अनुसार,** गर्दभिल्ल 74 ईसा पूर्व में सत्ता में आया और 61 ईसा पूर्व में शकों द्वारा पराजित हुआ। लेकिन मेरुतुंगा के कार्यों को आम तौर पर उनके समकालीनों और आधुनिक इतिहासकारों की तुलना में खराब गुणवत्ता वाला माना जाता है
- शकों के राजा नहपान ने मालवा पर हमला कर उस पर कब्जा कर लिया और युद्ध के दौरान उनके पिता राजा गर्दभिल्ल की मृत्यु हो गयी।
- एक अन्य मान्यता के अनुसार गर्दभिल्ल शकवंशी एक राजा का नाम है, जिसका मौर्यकालीन बुंदेलखंड पर अधिकार रहा था।

विक्रमादित्य

- गर्दभिल्ल(गंधर्वसेन) के बाद उनके उत्तराधिकारी के रूप में विक्रमादित्य उज्जयिनी के राजा बने जो एक महान शासक थे
- शकों के मालवा मे बीस वर्ष राज करने के बाद विक्रमादित्य ने शकों को हराकर मलावा को शकों से मुक्त कराया। विक्रमादित्य ने धीरे-2 शकों के वर्चास्व को समाप्त करने के लिए एक बड़ी सेना का निर्माण किया।
- अंततः उन्होंने शकों को हरा कर 56 ई.पू.विक्रम संवत की शुरुआत की।

सम्राट विक्रमादित्य का साहित्यिक उल्लेख

- **कालिदास ने सम्राट विक्रमादित्य का उल्लेख "ज्योतिर्विदभरणम"** की एक पुस्तक मे की है| इस पुस्तक को उन्होंने 33 ई.पू. मे लिखा था|
- **श्री कृष्ण मिश्रा ने अपनी पुस्तक ज्योतिषफल-रत्नमाला, (14 ईस्वी) में कहा कि** - "वह विक्रमार्क, सम्राट, मानुस की तरह प्रसिद्ध, जिसने सत्तर वर्षों तक मेरी और मेरे संबंधों की रक्षा की, मुझे एक करोड़ सोने के सिक्के दिए हैं जो सफलता और समृद्धि के साथ हमेशा के लिए फलते-फूलते हैं।
- **कल्हण द्वारा लिखित राजतरंगिणी के तीसरी तरंग में**
- **विक्रमादित्य की पौराणिक कथाएँ** वर्णित है जिसके अनुसार -महाराजा विक्रमादित्य ने मातृगुप्त को अपने जागीरदार राज्य, कश्मीर की संप्रभुता के साथ स्थापित किया साथ ही कश्मीर में मंत्रियों के मंत्रिमंडल ने अपने अधिपति महाराजा विक्रमादित्य को एक संदेश भेजा, और उनसे प्रतिनियुक्ति करने का अनुरोध किया।
- संस्कृत की सर्वाधिक लोकप्रिय दो कथा-श्रृंखलाएं हैं जो कि राजा विक्रमादित्य से सम्बंधित हैं वो है-

  1. वेताल पंचविंशति या बेताल पच्चीसी ("पिशाच की 25 कहानियां") और

  2. सिंहासन-द्वात्रिंशिका ("सिंहासन की 32 कहानियां" जो सिहांसन बत्तीसी के नाम से भी विख्यात हैं)।

  इन दोनों के संस्कृत और क्षेत्रीय भाषाओं में कई रूपांतरण उपलब्ध हैं।
- विक्रमादित्य के दरबार मे नौ रत्न भी थे, नौ रत्नों की परम्परा सम्राट विक्रमादित्य से ही शुरू हुई थी। विक्रमादित्य के दरबार मे नौ रत्नों का उल्लेख इस प्रकार है-

1. धनवंतरी:–
- धनवंतरी एक आयुर्वेदिक वैद्य थे, धन्वंतरि ने एक बार चमत्कारिक औषधी से राजा विक्रमादित्य के प्राण बचाये थे।
- इन्होंने कई सारे आयुर्वेद पर आधारित ग्रंथ भी लिखे थे

2. 2. **क्षपणक:-**
- नवरत्नों में दूसरे रत्न क्षपणक थे, यह एक सन्यासी थे जो बौद्ध धर्म को मानते थे
- इन्होंने भिक्षाटन तथा नानार्थकोश जैसे ग्रंथ भी लिखें, जिनका उद्देश्य मनुष्य जाति को नीति, अहिंसा और धर्म के मार्ग पर चलना सिखाया।

3. अमर सिंह:-
- अमर सिंह एक महान विद्वान थे जिनको पंडितों का पिता कहां जाता था
- इन्होंने ही अमर शब्दकोश का निर्माण किया
- बोधगया के मंदिर में अमर सिंह का शिलालेख यह बताता है कि उन्होंने ही मंदिर का निर्माण करवाया था
- इनके अमरकोश नाम के ग्रंथ में अष्टाध्यायी को पंडितों की माता का कहा गया है यदि कोई भी मनुष्य अमरकोश को पढ़ ले तो वह एक महान पंडित की बन जाता है।

4. शंकु:-
- सम्राट विक्रमादित्य के राज्य में नीति शास्त्र के सबसे बड़े ज्ञानी शंकु को ही कहा जाता था
- वह एक रस आचार्य थे जिनका पूरा नाम शङ्गूक था, जिनका काव्य ग्रंथ भुवनाभ्युदम बहुत प्रसिद्ध है।

5. वैतालभट्ट:-
- वैतालभट्ट (बेतालभट्ट) एक धर्माचार्य थे,
- यह माना जाता है कि इन्होंने ही सम्राट विक्रमादित्य को 16 छंद यानी नीति आचरण सिखाया था
- यह युद्ध कौशल के महारथी भी थे जो हमेशा सम्राट विक्रमादित्य के निकट ही रहते थे इन्हें द्वारपाल भी कहा जाता था।
- वैतालभट्ट ने ही विक्रम तथा बेताल की कहानी की वेताल पंचतवती की कहानी लिखी थी जिसकी लोकप्रियता पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है।

6. खटकपारा /घटकर्पर:-
- घटकर्पर एक संस्कृत विद्वान थे उन्होंने यह प्रतिज्ञा ली थी कि जो भी उन्हें अनुप्रास और यमक में हरा देगा वह उनके घर पर फूटे हुए घड़े से पानी भरेंगे क्योंक उस समय तक उनसे बड़ा कोई भी संस्कृति का विद्यान नहीं था
- घटकर्पर ने अपने कविता पुस्तक घटकर्पर काव्यम में नीतिसार को संस्कृत में लिखा था।

7. कालिदास:-
- नवरत्नों में सबसे प्रसिद्ध कालिदास ही थे कालिदास एक संस्कृत महाकवि थे
- वह राजा विक्रमादित्य के सबसे प्रिय कवि थे कालिदास अभिज्ञानशाकुंतलम जैसी प्रसिद्ध नाटक की रचना की।

8. वराह मिहिर :-
- वराह मिहिर उस युग के सबसे प्रमुख ज्योतिषियों में से एक थे
- इन्होंने विक्रमादित्य के **बेटे देवभक्त** की मृत्यु की भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी
- इन्होंने ही विष्णु स्तंभ का निर्माण करवाया जिसे मुगलों ने आक्रमण के बाद कुतुब मीनार में बदल दिया था।

9. वररूचि:-
- वररूचि एक कवि और व्याकरण के ज्ञाता माने जाते थे उन्हें शास्त्रीय संगीत का पूर्ण ज्ञान था
- कालिदास की भांति इन्हें भी काव्यकर्ताओ में एक माना जाता था।

2 Chapter तोमर वंश

- ग्वालियर के तोमर राजाओ का मूल स्थान तँवरघर (मुरैना के आसपास का क्षेत्र) था।
- **ग्वालियर के तोमर वंश की स्थापना**- 1394 ई.
- **संस्थापक**- वीरसिंह देव
- वीरसिंह देव
  - वीरसिंह देव ने 'वीरसिंह व लोक' नामक ग्रंथों की रचना की।
  - वीरसिंह देव को सुल्तान अलाउद्दीन सिकन्दरशाह ने गोपांचल गढ़ (ग्वालियर) का प्रशासक नियुक्त किया था।
  - वीरसिंह देव के बाद कई तोमर शासको ने शासन किया किन्तु इनमे सबसे ज्यादा प्रसिद्धि मानसिंह तोमर को प्राप्त हुई
- उद्धरणदेव(1400-1423ई.)
- गणपति देव (1423-1425 ई.)
- डूंगरसिंह (1425-54ई.)
- कीर्तिसिंह (1459-1480ई.)
- कल्याणमल (1480 1486ई.)
  - इन्हें भूपमुनि कहा जाता था
  - इन्होने सुमेलचित नामक ग्रंथ की रचना की
- मानसिंह तोमर(1486-1516ई.)
  - मानसिंह तोमर इस वंश का सबसे प्रतापी राजा राजा था।
  - मानसिंह ने ग्वालियर के किले में मान मंदिर, सास-बहू का मंदिर तथा गुजरी महल का निर्माण करवाया था।
  - संगीत के प्रमुख ग्रंथ मान कुतूहल की रचना मानसिंह ने की थी ।
  - मानसिह द्वारा सिंचाई के लिए अनेक झीलों का निर्माण करवाया गया था।
  - 1500ई. में मानसिंह ने अपने प्रतिनिधि निहालसिंह को सिकंदर लोदी के दरबार मे भेजा था।
  - 1517ई. में इब्राहिम लोदी ने ग्वालियर पर आक्रमण कर यहाँ का किला जीत लिया इस युद्ध मे मानसिंह वीरगति को प्राप्त हुआ।
  - प्रसिद्ध उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा ने अपने उपन्यास मृगनयनी में मानसिंह और उनकी रानी मृगनयनी का चित्रण किया है।
  - मानसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र विक्रमादित्य गद्दी पर बैठा जो तोमर वंश का अंतिम शासक था।
  - विक्रमादित्य पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में मारा गया।
  - इस प्रकार 125 वर्षो में ग्वालियर राज्य के तोमर वंश का अंत हो गया।

ग्वालियर के तोमर शासकों की सूची

शासको के नाम	शासन वर्ष
वीरसिंह देव	1375-1400 ईस्वी.
उद्धारण देव	1400-1402 ईस्वी.
विराम देव	1402-1423 ईस्वी.
गणपति देव	1423-1425 ईस्वी.
डुंगरेंद्र देव उर्फ डुंगारा सिन्हा	1425-1459 ईस्वी.
कीर्तिसिंह देव	1459-1480 ईस्वी.
कल्याणमल्ल	1480-1486 ईस्वी.
मानसिंह	1486-1516 ईस्वी.
विक्रमादित्य	1516-1523 ईस्वी.

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 Chapter बुंदेलखंड रियासत

प्राचीन बुन्देल

- प्राचीनकाल में सर्वप्रथम बुन्देलखण्ड क्षेत्र का परिचय **चेदि जनपद** से मिलता है।
- रामायण काल में राम के छोटे भाई **शत्रुघ्न के पुत्र शत्रुघाती** ने **दशार्ण अर्थात् विदिशा** पर शासन किया और कुशावती (बिलासपुर) इनकी राजधानी थी
- **दशार्ण अर्थात् विदिशा** का कुछ क्षेत्र भी वर्तमान बुन्देलखण्ड क्षेत्र के अंतर्गत आता था।
- उत्तर ऋग्वैदिक काल में इस सम्पूर्ण क्षेत्र पर मौर्यो का शासन था। तत्पश्चात् शुंगों ने क्षेत्र पर शासन किया
- शुंगो के बाद गुप्तों द्वारा इस क्षेत्र पर प्रशासन सम्भाला गया। जिसका प्रमाण ललितपुर के निकट देवगढ़ में स्थित दशावतार मंदिर है।
- गुप्तोत्तर काल में इस क्षेत्र पर **मौखरि, कल्चुरि एवं गुर्जर-प्रतिहार वंश** के शासकों का शासन रहा।
- प्रतिहार वंश के पश्चात् इस क्षेत्र पर चंदेल वंश का आधिपत्य हुआ, जो प्रारंभ में प्रतिहारों के सामंत थे और बाद में सम्पूर्ण क्षेत्र के स्वामी बने।
- इनके समय से ही बुन्देलखण्ड क्षेत्र की सीमा का निर्धारण हुआ।

अतः बुन्देलखण्ड राज्य का वास्तविक इतिहास चंदेल राज्य से ही प्रारंभ होता है।

चंदेल राज्य की स्थापना

- इस समय उत्तर भारत की वास्तविक सत्ता का अधिकारी उस शासक को माना जाता था जो कन्नौज पर अधिकार करता था।
- गुर्जर प्रतिहार वंश के शासकों की कन्नौज पर विजय त्रिपक्षीय संघर्ष में अंतिम रूप से हुई थी। और हर्षवर्धन यह का शासक बना
- किन्तु 9वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में प्रतिहारों के सामंत चंदेलों ने इस सत्ता का अधिग्रहण धीरे-धीरे कर लिया। जिसका पितृपुरुष नन्नुक था ।
- 831 ई. में नन्नुक द्वारा चंदेल राजवंश की नींव रखी गई।
- खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर अभिलेख से उसके नृप, नृपति तथा महिपति आदि उपाधियों को धारण करने से ज्ञात होता है कि नन्नुक ने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी ।
- नन्नुक के पश्चात् हर्ष तक चंदेल शासकों ने प्रतिहारों के अधीनस्थ राज्य का विस्तार किया। परन्तु हर्ष के पश्चात् सभी शासक स्वतंत्र रूप से चंदेल वंश के शासक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

Refer- mppsc part 1 page 14,26,27,28,29,30

चंदेलकालीन वास्तुकला की विशेषताएँ

1. मूर्तिकला

- चंदेल कालीन वास्तुकला एवं स्थापत्य कला की महत्वपूर्ण विशेषता वहाँ की मूर्तियाँ हैं।
- इन मूर्तियों को 5 महत्वपूर्ण भागों में बाँटा गया है-
  - **प्रथम वर्ग में** आराध्य मूर्तियों में विष्णु, शिव एवं देवी-देवताओं की मूर्तियाँ अवस्थित हैं। इस वर्ग का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण लक्ष्मण और विश्वनाथ मंदिर हैं।
  - **दूसरे वर्ग में** पार्श्व या आवरण देवताओं की मूर्तियाँ हैं जो मंदिरों की बाह्य दीवारों पर विद्यमान हैं। इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण कंदरिया महादेव मंदिर में देखने को मिलता है।
  - **तीसरे वर्ग में** वह प्रतिमायें है जिन्हें सुरसुंदरी या अप्सरा कहते है। यह मंदिरों की बाहरी दीवारों, स्तंभों, आलम्बन बाहुओं, मण्डप और महामण्डप के अर्धस्तंभों पर अवस्थित हैं।
  - **चतुर्थ वर्ग में** पशु-पक्षियों की प्रतिमाएँ हैं, जिनमें पशुओं में सबसे अधिक व्याल(व्याल्दूल) मिलता है। जिसे प्रायः सींगों वाले शेर के रूप में चित्रित किया गया है।
  - **पाँचवें वर्ग में** मिथुन मूर्तियाँ है, जिनका उल्लेख जैन मंदिरों को छोड़कर प्रायः चतुर्दिक एकाधिक स्थानों पर अनेक सीधी और अन्तरंग मुद्राओं में संभोग से समाधि की ओर जाती हुई विभिन्न संभोगरत मूर्तियों के रूप में अंकन है।
- धर्म और काम का समन्वय विशेष रूप से मंदिरों में देखने को मिलता है।
- विद्याप्रकाश के अनुसार खजुराहो में निर्मित मूर्तियों का वर्गीकरण
  - नग्नता के साथ कामुक संकेत करती हुई अप्सराएँ,
  - दम्पति अथवा युगल ।
  - काम उत्तेजक चुम्बन और आलिंगन बद्ध युगल ।
  - कामरत युगल।
  - विलक्षण मुद्राओं में कामरत स्त्री-पुरुष ; तथा
  - **पशु**-मैथुन आदि ।

2. खजुराहों के मंदिर

- चंदेल खजुराहो नगर के निर्माता हैं। उनके बनवाये हुए विश्वप्रसिद्ध खजुराहों के मंदिर भारतीय कला के सर्वोत्तम नमूने हैं। जिनकी विशेषता नागर शैली है।
- इन मंदिरों में आकार, सौंदर्य और मूर्ति सम्पदा के महत्त्वपूर्ण तत्त्व विद्यमान है।
- यहाँ निर्मित शैव, वैष्णव और जैन मंदिरों की निर्माण शैली एवं शिल्प विधान लगभग एक समान है। जिनकी महत्त्वपूर्ण विशेषता तलछंद और उर्ध्वछंद है। जो प्रायः ऊँची चौकी पर स्थापित किये गये है। इनके चारों और किसी प्रकार की दीवार नहीं है।
- भू-स्थिति या तलछंद में यह लैटिनक्रॉस आकार के हैं, जिनकी भुजाएँ पूर्व से पश्चिम की ओर बनाई गई है।
- मंदिरों के मुख्य प्रधान अंग 3 हैं- **गर्भ गृह, मण्डप और अर्धमण्डप।**
- गर्भ गृह और अर्धमण्डप के बीच अंतराल है, जिनके मध्य स्थान में प्रदक्षिणापथ विद्यमान है।
- गर्भ गृह या परिक्रमा पथ के आंतरिक भागों में बाह्य दीवारे है जिन पर विभिन्न मूर्तियाँ बनाई गई है। कंदरिया महादेव के प्रदक्षिणापथ में लगभग 650 मूर्तियाँ हैं।
- खिड़की या झरोखो से मंदिर के भीतर पहुँचने वाले प्रकाश से मंदिर के अंदर का समस्त भू-भाग प्रकाशमान होता है।
- मंदिरों के अंतर भागों का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि वे धार्मिक कर्मकाण्डों और उत्सवों को ध्यान में रखकर बनाये गये थे।
- मंदिरों में एक मात्र द्वार से प्रवेश करने हेतु पूर्व की ओर ऊँची सीढियां निर्मित है।
- द्वारमण्डप के ऊपर एक अलंकृत मकर तोरण है। जिस पर अधिक मात्रा में लघु प्रतिमाओं का संयोजन है जो बाहर से देखने पर लटकती हुई प्रतीत होती हैं।
- प्रवेश मण्डल का एक छोटा आयताकार प्रवेश मार्ग है जो मण्डप में प्रवेश के साथ कुछ चौड़ा हो जाता है।
- **पर्सी ब्राउन के अनुसार** "भारतीय वास्तुकला के क्षेत्र में खजुराहो का ऐसा कल्पनागत चित्रण शायद ही अन्य कही देखने को मिलता है जो अपने आप में कलात्मक दृष्टि की सम्पूर्णता को दर्शाती है

चंदेल कालीन प्रमुख मंदिर

1. पश्चिमी समूह

- ब्रिटिश इंजीनियर टी एस बर्ट ने खजुराहो के मंदिरों की खोज की तब से मंदिरों के एक विशाल समूह को 'पश्चिमी समूह' के नाम से जाना गया जो शिवसागर के नजदीक स्थित है।
- इन मंदिरों के शिल्पगत सौंदर्य के कारण यूनेस्को द्वारा वर्ष 1986 में खजुराहो मंदिर श्रृंखला को विश्व धरा स्थल घोषित किया।
- हाल ही में खजुराहो में स्वदेश दर्शन योजना के तहत् महाराजा छत्रसाल सम्मेलन केन्द्र का भी उद्घाटन किया गया है।

○ **चौसठ योगिनी मंदिर**

- निर्माण- 9वीं शताब्दी में चंदेल शासकों द्वारा
- खजुराहों का सबसे प्राचीन मंदिर
- मंदिर की चार दीवारी में मूर्तियों को रखने हेतु चौसठ छोटी कोठरिया बनी हैं।
- मंदिर की लम्बाई 104 फीट तथा चौड़ाई 59 फीट है।
- अब सिर्फ ध्वंस अवशेष रूप में मौजूद

○ **कंदरिया महादेव मंदिर**

- निर्माण- विद्याधर चंदेल द्वारा
- यह खजुराहों के मंदिरों में सबसे बड़ा मंदिर है।
- इसकी ऊँचाई 31 मीटर है तथा क्षेत्रफल 6 वर्ग कि.मी. है।
- इस मंदिर का निर्माण 13 फीट ऊँचे चबूतरे पर कराया गया है।
- मंदिर के गर्भगृह में संगमरमर का बना शिवलिंग स्थित है।

○ **सूर्य (चित्रगुप्त) मंदिर**

- निर्माण- विद्याधर के काल में
- खजुराहो में एकमात्र सूर्य मंदिर है जिसका नाम चित्रगुप्त है। चित्रगुप्त मंदिर एक ही चबूतरे पर स्थित चौथा मंदिर है।
- इसका हुआ था।
- इसमें भगवान सूर्य की सात फुट ऊंची प्रतिमा कवच धारण किए हुए स्थित है।
- इसमें भगवान सूर्य सात घोड़ों के रथ पर सवार हैं।

○ **पार्वती मंदिर**

- निर्माण-1843-1847 ईसवीं महाराजा प्रताप सिंह द्वारा
- भगवान विष्णु को समर्पित
- इसमें पार्वती की आकृति को गोह पर चढ़ा हुआ दिखाया गया है।

○ **देवी जगदम्बा मंदिर**

- निर्माण- 1000 से 1025 ईसवीं
- कंदरिया महादेव मंदिर के चबूतरे के उत्तर में जगदम्बा देवी का मंदिर है।
- जगदम्बा देवी का मंदिर पहले भगवान विष्णु को समर्पित था
- सिंह मंदिर
- यह मंदिर कंदरिया महादेव मंदिर और देवी जगदम्बा मंदिर के बीच बना है।

○ **विश्वनाथ मन्दिर**

- निर्माण- सन्1001-1002 ई. में राजा धंगद्वारा

- यह मंदिर शंकर भगवान से संबंधित
- पंचायतन शैली का प्रयोग किया गया है।
- गर्भगृह में शिवलिंग के साथ केंद्र में नंदी पर आरोहित शिव प्रतिमा स्थापित की गयी है।

○ **नन्दी मंदिर**

- नन्दी मंदिर, विश्वनाथ मंदिर के सामने बना है|.

○ **लक्ष्मण मंदिर**

- निर्माण-954 ईसवीं में
- यह उच्च कोटि का मंदिर है।
- इसमें भगवान विष्णु को बैकुंठम के समान बैठा हुआ दिखाया गया है।
- चार फुट ऊंची विष्णु की इस मूर्ति में तीन सिर हैं। ये सिर मनुष्य, सिंह और वराह के रूप में दर्शाए गए हैं।
- मंदिर के प्लेटफार्म की चार सहायक वेदियां हैं। मंदिर के सामने दो लघु वेदियां हैं। एक देवी और दूसरा वराह देव को समर्पित है।
- बने इस मंदिर का संबंध तांत्रिक संप्रदाय से है।
- इसका अग्रभाग दो प्रकार की मूर्तिकलाओं से सजा है जिसके मध्य खंड में मिथुन या आलिंगन करते हुए दंपत्तियों को दर्शाता है।
- यह विशाल वराह की आकृति पीले पत्थर की चट्टान के एकल खंड में बनी है।

○ **लक्ष्मी मंदिर**

- लक्ष्मी मंदिर, लक्ष्मण मंदिर के सामने बना है।

○ **वराह मंदिर**

2. पूर्वी समूह

- पूर्वी समूह के मंदिरों को दो विषम समूहों में बांटा गया है।
- इस श्रेणी के प्रथम चार मंदिरों का समूह प्राचीन खजुराहो गांव के नजदीक है।
- दूसरे समूह में जैन मंदिर हैं

○ **वामन मंदिर**

- निर्माण-1050 से 1075 ईसवीं के मध्य
- मान्यता है कि भगवान विष्णु के अवतारों में इसकी गणना की जाती है।

○ **जायरी मंदिर**

- निर्माण- 1075-1100 ईसवीं के मध्य
- मंदिर विष्णु भगवान को समर्पित है।

○ **ब्रह्मा मंदिर**

- स्थापना- 925 ईसवीं में
- ब्रह्मा मंदिर का संबंध ब्रह्मा देव से न होकर भगवान शिव से है।
- इस मंदिर में एक चार मुंह वाला लिंगम स्थित है।

○ **जैन मंदिर**

- इन मंदिरों का समूह एक निर्धारित क्षेत्र में स्थित है।
- इन जैन मंदिरों को दिगम्बर सम्प्रदाय ने बनवाया था।

○ **आदिनाथ मंदिर**

- जैन समूह का यह सबसे विशाल मंदिर तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है।
- आदिनाथ मंदिर पार्श्वनाथ मंदिर के उत्तर में स्थित है।

○ **पार्श्वनाथ जैन मंदिर**

○ **शांतिनाथ जैन मंदिर**

- स्थापित-ग्यारहवीं शताब्दी
- जैन समूह का यह अन्तिम मंदिर के रूप में बनवाया गया था।
- इस मंदिर में यक्ष दंपत्ति की आकर्षक मूर्तियां हैं।

3. दक्षिणी समूह

- **इस भाग में दो मंदिर हैं।**

○ **दुलादेव मंदिर**

- निर्माण-1130 ईसवी में मदनवर्मन द्वारा
- खुद्दर नदी के किनारे स्थित
- भगवान शिव से संबंधित
- इस मंदिर में खंडों पर मुंद्रित दृढ़ आकृतियां हैं।
- कुछ इतिहासकार इसे कुंवरनाथ मंदिर भी कहते हैं।

○ **चतुर्भुज मंदिर**

- निर्माण-1100 ईसवीं में
- भगवान विष्णु से संबंधित जिसे चतुर्भुज मंदिर कहा जाता है। चतुर्भुज मंदिर का किया गया था।
- इसके गर्भ में 9 फुट ऊंची विष्णु की प्रतिमा को संत के वेश में दिखाया गया है।

- **अन्य मंदिर**

○ **ककरामठ मंदिर**

- **स्थित**- वर्तमान महोबा जिले, उत्तरप्रदेश
- **निर्माण**-चंदेल काल में राजा मदनवर्मा चंदेल द्वारा
- नाथपंथी विचारधारा एवं हिन्दू धर्म का महत्त्वपूर्ण केन्द्र

- **अन्य स्थापत्य**
  - **मदन महल**
    - यह अत्यंत साधारण भवन है जो एक गोल चट्टान पर बना है।
    - **स्थित**-जबलपुर के मदन महल में
    - यह चंदेल नरेश मदनवर्मा का राजप्रसाद था।
  - **आल्हा की गिल्ली**
    - स्थित- महोबा के दक्षिण पूर्वी भाग में; जो आल्हा की लाट या आल्हा की गिल्ली कहलाता है।
    - ऊँचाई 9 फीट तथा इसका व्यास 13 इंच है।
    - निर्माण- बलुआ पत्थर एवं चूने से गोलाकार स्तम्भ के रूप में
  - **खजूर सागर**
    - निर्माण- परमार्दिदेव चंदेल द्वारा
    - स्थित- खजुराहो के समीप है।
    - इसका अन्य नाम नैनोरी ताल है।
  - **मनियागढ़**
    - निर्माण- चंदेल शासकों द्वारा
    - स्थित- केन नदी के पश्चिमी तट पर।
    - यहाँ चंदेलों की कुलदेवी मनिया देवी का मंदिर है।

बुन्देलखण्ड रियासत में 1857 की क्रांति

- 1818-1848 ई. के मध्य बुन्देलखण्ड में ब्रिटिश सत्ता का प्रसार क्रमशः हुआ परन्तु 1848 ई. में लार्ड डलहौजी के भारत आते ही साम्राज्यवाद, विस्तारवाद एवं हड़प नीति का प्रसार हुआ।
- इस समय बुन्देलखण्ड की एक प्रमुख रियासत झाँसी का विलय निःसंतान होने के कारण ब्रिटिश राज्य में कर दिया।
- 10 मई, 1857 ई. को मेरठ से प्रारम्भ हुई क्रांति ने 4 जून को झाँसी में दस्तक दी तथा 8 जून को झाँसी के विद्रोहियों ने 110 अंग्रेजों को झोकनबाग में मार दिया।
- 21 नवम्बर, 1853 ई. में झाँसी के शासक गंगाधरराव की मृत्योपरांत वानपुर रियासत के राजा मर्दनसिंह, शाहगढ़ राजा बखतवली, कानुपर के नानासाहेब एवं तात्या टोपे झाँसी में एकत्रित हुए तथा अंग्रेज विरोधी रणनीति तैयारी की।
- 12 जून को क्रांति का प्रसार ललितपुर बानपुर में हुआ। जहाँ क्रांति का नेतृत्व राजा मर्दनसिंह ने किया।
- 1 जुलाई, 1857 ई. को सागर में क्रांति आरंभ हुई तथा 370 अंग्रेजों ने सागर किले में शरण ली। परन्तु बानपुर राजा मर्दन सिंह, शाहगढ़ के राजा बखतवली, बखतवली का सेनापति **बौधन दौआ** एवं गढ़ी अम्बापानी के नवाब बंधु आदिल मोहम्मद खान तथा फाजिल मोहम्मद खान ने किले को चारों ओर से घेर लिया।
- बुन्देलखण्ड में उत्तर में क्रांति का नेतृत्व झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे एवं बाँदा के नवाब अलीबहादुर द्वितीय ने किया।
- मध्य बुन्देलखण्ड में मर्दनसिंह एवं बखतवली ने दक्षिण में रामगढ़ की रानी अवंतीबाई ने क्रांति का नेतृत्व किया।
- इसी क्रम में जनरल ह्यूरोज के अधीन महू में सेण्ट्रल इंडिया फोर्स का गठन किया गया।
- बुन्देलखण्ड में चरखारी एवं पन्ना रियासतों ने अंग्रेजों की मदद की ओर अंततः 1857 की क्रांति के दमन के पश्चात् 30 रियासतें अधीनस्थ संघ में शामिल कर ली गई।
- 1857 की क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई युद्ध में मारी गई शाहगढ़ राजा बखतवली एवं बानपुर राजा मर्दनसिंह ने आत्मसमर्पण कर दिया। तात्या टोपे को शिवपुरी में फाँसी दे दी गई।

ब्रिटिश शासन के अधीन बुन्देलखण्ड राज्य

- बुन्देलखण्ड रियासत के प्रति ब्रिटिश सरकार ने दो नीतियों का अनुपालन किया।
  - पहली नीति (1818-1848) में अंग्रेजों ने सहायक संधि एवं अधीनस्थ के रूप में कार्य किया।
  - दूसरी नीति में 1857 की क्रांति के पश्चात् 1858 ई. में बुन्देलखण्ड के प्रति ब्रिटिश नीति में परिवर्तन आया। जिसमे बुंदेलखंड की रियासतों के अधिकारों, गौरव तथा प्रतिष्ठा को बनाये रखने की बात कही गयी
- 1862 ई. में ब्रिटिश सरकार ने अधीनस्थ संघ की नीति अपनाई। जिसके अंतर्गत बुन्देलखण्ड की 30 रियासतें अधीनस्थ संघ में सम्मिलित हो गई-
- जिनमें दतिया, ओरछा एवं समथर **संधि वाली रियासतें** थी। पन्ना, बिजावर, अजयगढ़, छतरपुर, बावनी, बरौधा, लुगासी, सरीला, जिगनी, बेरी, बीहट, अलीपुर, गौरीहार, गरौली, नौगुवाँ, धुरवई, बिजना, टोड़ी-फतेहपुर, बंका पहाड़ी, जसो, पालदेव, तरौन, भैसुदा, पहरा, कामता - रजौला एवं खनियाधाना **सनद वाली रियासतें** थी, जिन्हें अधीनस्थ संघ में शामिल किया गया।
- 1877 ई. में दिल्ली दरबार में बुन्देलखण्ड के कुछ शासकों को उपाधियाँ दी गई। जिन्होंने महारानी विक्टोरिया को अपनी साम्राज्ञी घोषित किया था।
- इन राजाओं को ब्रिटिश शासन द्वारा अनेक उपाधियाँ दी गई। जिनमें प्रमुख थे-
  - 1877 ई. में दिल्ली दरबार में पन्ना शासक रुद्रप्रताप को स्वर्ण पदक दिया गया।
  - जसो जागीर के गजराज सिंह को दीवान बहादुर की पदवी दी गई।
  - अजयगढ़ के रजोरसिंह को सवाई की उपाधि दी गई।
  - चरखारी शासक जयसिंह देव को सिमहदाहल्मुल्क की उपाधि दी गई।
  - बिजावर शासक भानुप्रताप सिंह को सवाई की पदवी दी गई।

- सरीला रियासत में खलख सिंह को बहादुर की पदवी दी गई।
- जिगनी रियासत के राजा लक्ष्मण सिंह को बहादुर की पदवी दी गई।
- दतिया नरेश भुमानी सिंह को लोकेन्द्र की उपाधि दी गई।

1857 की क्रांति के पश्चात् लगभग सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड अंग्रेजों के अधीन रहा। जिसे मुक्ति 1947 ई. में स्वतंत्रता के पश्चात् ही मिली।

बुन्देलखण्ड का प्रशासन

- मध्यकालीन बुन्देलखण्ड की सर्वोच्च प्रशासनिक सत्ता बुन्देलों के हाथ में रही और लगभग सभी रियासतों में बुन्देलावंशी शासकों ने ही शासन किया। अतः लगभग सभी रियासतों में एक जैसी शासन व्यवस्था ही थी।
- मुख्य प्रशासनिक अंग राजा, दीवान, ब्राह्मण, दरबार खास, दुर्ग महल थे।
  - **राजा**
    - बुन्देलखण्ड में मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में राजा ही सर्वे सर्वा होता था।
    - उसकी शक्तियाँ निरंकुश थी। वह गोपनीय विभाग का प्रमुख होता था।
  - **दीवान**
    - दीवान वित्त, राजस्व विभाग का प्रमुख तथा प्रशासनिक मुखिया होता था।
    - जब राजा युद्ध में व्यस्त होते थे। उस समय दीवान राजा के समान निर्णय लेते थे।
    - यह पत्र व्यवहार विभाग का भी प्रमुख होता था।
  - **ब्राह्मण**
    - ब्राह्मण बुन्देला शासकों के दीक्षा गुरु थे।
    - धार्मिक अनुष्ठान एवं कर्मकाण्ड संबंधी कार्यों के उत्तरदायी
  - **दरबार खास**
    - राजा के अधीन दरबार खास काम करता था। जो राज्य के सभी कर्मचारियों, जागीरदारी, गाँव पर नियंत्रण रखता था।
    - हुजूर दरबार राजा की व्यक्तिगत जागीरदारों एवं सामंतों के लिए नियुक्त किया जाता है। दुर्गमहल
  - **दुर्ग महल**
    - मुगल प्रशासनिक इकाई परगना के समान थी।
    - मुगलकालीन परगना के समान ही प्रत्येक दुर्ग में एक दुर्गदार या किलेदार की नियुक्ति की जाती थी
    - दुर्ग एवं आसपास के क्षेत्र पर नियंत्रण रखता था।

बुन्देलखण्ड की राजस्व व्यवस्था

- मध्यकालीन बुन्देलखण्ड में राज्य की आय के प्रमुख साधनों में राजस्व, वन सम्पदा, चुंगी, हाटबजार न भेंट, युद्ध अभियानों से प्राप्त आय तथा भूमियावट थे।
- राजस्व से आय के अंतर्गत खरीफ एवं रबी की समाहित किया जाता था।
- वन सम्पदा बुंदेलखण्ड की महत्वपूर्ण सम्पदा थी। अतः डांगों में साज, सागौन, महुआ, नीम आदि पेड़ उनका व्यापार किया जाता था। जिन पर वन सम्पदा कर, चुंगीकर एवं हाट बाज़ार कर लगाया जाता था।
- नजरमेंट एवं भूमियावट की प्राप्ति शासकों को छोटे जागीरदार एवं ठाकुरों से होती थी।